रूह विरहा खिन एक ना सहें, सो अब चली जात मुद्दत।
अर्स रूहें यों भूल के, क्यों छोड़ें हक मारफत।। ८४ ।।

जो रूहें एक क्षण का बिछोह सहन नहीं कर सकती थीं, उनके लिए यहां मुद्दतें बीत रही हैं, इसलिए परमधाम की रूहें इस तरह से भूलकर भी श्री राजजी महाराज का मारफत का ज्ञान नहीं छोड़ेंगी।

मारफत हुई हाथ हक के, क्यों ले सकिए सोए।
ए दोस्ती तब होवहीं, जब होए प्यार बराबर दोए।। ८५ ।।

क्योंकि मारफत भी श्री राजजी के हाथ में है। उसको कैसे ले सकते हैं? यह दोस्ती तभी सम्भव है जब दोनों तरफ से प्यार हो।

मारफत देवे इस्क, इस्कें होए दीदार।
इस्कें मिलिए हकसों, इस्कें खुले पट द्वार।। ८६ ।।

श्री राजजी महाराज के मारफत के ज्ञान से इश्क मिलता है। इश्क से दीदार होता है। इश्क से श्री राजजी महाराज का मिलना होता है। इश्क से ही परमधाम के दरवाजे खुलते हैं।

सोई रब्द जो हकसों किया, वास्ते इस्क के।
सो इस्क तब आइया, जब हकें दिया ए।। ८७ ।।

इस इश्क के वास्ते ही परमधाम में श्री राजजी महाराज से इश्क का वार्तालाप किया था। अब वह इश्क तब आया जब श्री राजजी महाराज ने दिया।

हांसी करी रूहन पर, दे इलम बेसक।
मासूक हंस के तब मिले, जब हकें दिया इस्क।। ८८ ।।

श्री राजजी महाराज ने रूहों को बेशक इलम देकर हंसी की। जब अपना इश्क दिया, तब हंसते हुए रूहों से मिले।

महामत कहे ए मोमिनों, सब बातों का ए मूल।
ए काम किया सब हुकमें, आए इमाम मसी रसूल।। ८९ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! सब बातों का यही मूल है (सार है) कि यह सब काम श्री राजजी महाराज के हुकम ने किया है। हुकम से ही यहां पर रसूल साहब, श्री श्यामाजी (श्री देवचन्द्रजी) और इमाम मेंहदी (श्री प्राणनाथजी) आए हैं।

॥ प्रकरण ॥ २५ ॥ चौपाई ॥ १९३९ ॥

कलस का कलस

बसरी मलकी और हकी, कही महंमद तीन सूरत।
कारज सारे सिध किए, अव्वल बीच आखिरत।। १ ।।

बसरी, मलकी और हकी–मुहम्मद की तीन सूरतें कुरान में लिखी हैं। जिन्होंने शुरू के, बीच के और आखिरत के सभी काम पूरे किए।

Nijanand App

ए तीनों मिल किया जहूर, अव्वल आखिर रोसन।
हक बैठे इन इलम में, तो दिल अर्स हुआ मोमिन।। २ ।।

इन तीनों सूरतों ने मिलकर शुरू में, बीच में और आखिर में परमधाम की हकीकत बताई। श्री राजजी महाराज जागृत बुद्धि के ज्ञान इस वाणी में बैठे हैं, इसलिए मोमिनों के दिल को अर्श कहा है।

ए जुबां मैं हक की, और बोलत है हुकम।
हक अर्स बरनन तो हुआ, जो वाहेदत बका खसम।। ३ ।।

श्री महामतिजी कहते है कि मैं जो जबान से बोल रही हूं, वह श्री राजजी का हुकम ही बोल रहा है, इसलिए श्री राजजी महाराज का तथा परमधाम का वर्णन, जो अखण्ड रूहों का घर है और श्री राजजी उनके खसम हैं, किया है।

गैब खिलवत जाहेर तो हुई, जो हकें कराई ए।
ए खबर नहीं नूर को, करी लदुन्निएं जाहेर जे।। ४ ।।

मूल-मिलावा की छिपी बातें भी श्री राजजी महाराज ने ही जाहिर कराई हैं। जो खबर अक्षरब्रह्म को नहीं है, वह तारतम वाणी में सब जाहिर कर दी।

बरनन किया अर्स का, सो सब हिसाब अर्सै के।
गिनती सो भी अर्स की, ए बातें मोमिन समझेंगे।। ५ ।।

मैंने जो परमधाम का वर्णन किया वह सब गिनती परमधाम की है। उसी हिसाब से वर्णन किया है। इस बात को मोमिन समझेंगे।

या पहाड़ या तिनका, सो सब चीज बिध आतम।
सब देत देखाई जाहेर, ज्यों देखिए माहें चसम।। ६ ।।

परमधाम का पहाड़ हो या तिनका, सबकी हकीकत रूहों की तरह ही है। हम जैसी नजर से देखते हैं, वैसे यह सब दिखाई देते हैं।

और भी खूबी रूह नैन की, चीज दसों दिसा की सब देखत।
पाताल या आसमान की, रूह नजरों सब आवत।। ७ ।।

रूह के नैनों की एक और खास बात यह है कि यह दसों दिशाओं की सभी चीजें देखते हैं। पाताल और आसमान रूह की नजर से सब दिखता है।

रूह का एही लछन, बाहेर अन्दर नहीं दोए।
तन दिल दोऊ एकै, रूह कहियत हैं सोए।। ८ ।।

रूह अन्दर और बाहर से एक ही होती है, दो नहीं। यही उसकी पहचान है। जिनके तन और दिल में एक ही बात हो, उसे ही रूह समझना।

दूर नजीक भी अर्स के, सो भी पाइए अर्स सहूर।
नैन चरन अंग तीनों हीं, एक यादै में हजूर।। ९ ।।

जागृत बुद्धि के ज्ञान से परमधाम दूर है या नजदीक का ज्ञान हो जाता है, इसलिए रूह श्री राजजी के चरण, नेत्र और अंग तीनों की एक बार ही याद करने से चरणों में पहुंच जाती है।

Nijanand App

चाल मिलाप या दीदार, ए तीनों रूह के नेक।
जब हीं याद जो आवहीं, तब हीं होए माहें एक।। १० ।।

रूहों का श्री राजजी महाराज के साथ चलना, मिलना या दीदार करना तीनों ही रूहों के लिए अच्छे हैं। इन तीनों में जब जो याद आ जाए, तभी श्री राजजी महाराज का मिलन हो जाए।

यातो जिमी के दूर लग, या नजीक आगूं नजर।
दूर नजीक सब याद में, ए दोऊ बराबर।। ११ ।।

चाहे जमीन पर दूर हो या श्री राजजी महाराज की नजर के सामने हो, यह दूरी और नजदीकी तो याद आते ही बराबर हो जाती है।

अर्स दिल मोमिन तो कह्या, जो हक सों रूह निसबत।
ना तो अर्स दिल आदमी का, क्यों कह्या जाए ख्वाब में इत।। १२ ।।

मोमिनों के दिल को अर्श इसलिए कहा कि यह श्री राजजी महाराज की अंगना हैं, वरना सपने के ब्रह्माण्ड में आदमी के दिल को अर्श कैसे कहा जाए?

रूह तन की असल अर्स में, अर्स ख्वाब नहीं तफावत।
तो कह्या सेहेरग से नजीक, हक अर्स दुनी बीच इत।। १३ ।।

रूह की परआतम परमधाम में है, इसलिए परमधाम के तन और संसार के तन में कोई फर्क नहीं है। श्री राजजी महाराज ने इसलिए मोमिन को सेहेरग से नजदीक और खुदा को दुनियां में बताया है, क्योंकि खुदा मोमिनों के दिल को अर्श कर बैठे हैं।

दिल मोमिन अर्स तन बीच में, उन दिल बीच ए दिल।
केहेने को ए दिल है, है अर्सै दिल असल।। १४ ।।

मोमिनों के इस संसार के तन का जो दिल है, वह उनकी परआतम के दिल में है, इसलिए उनकी परआतम के दिल में जो आता है, वही यह दिल काम करता है। कहने को यहां संसार का दिल कहा जाता है, पर असली दिल तो परमधाम में है।

तो हक नजीक कह्या रूहन को, और नूर नजीक फरिस्तन।
और आम खलक देखन को, जो कहे जुलमत से तन।। १५ ।।

इसलिए श्री राजजी महाराज को रूहों के नजदीक कहा है और अक्षरब्रह्म को फरिश्तों (ईश्वरीसृष्टि) के नजदीक कहा है। बाकी जीवसृष्टि तो देखने मात्र के वास्ते हैं, जिनके तन निराकार (मोह तत्व) के हैं।

ए तीनों गिरो कही जाहेर, पर ए बीच मारफत राह।
ए कलाम अल्ला में बेवरा, योहीं कह्या रूह अल्लाह।। १६ ।।

ब्रह्मसृष्टि, ईश्वरीसृष्टि और जीवसृष्टि तीनों की पहचान मारफत के ज्ञान में बतलाई है। कुरान में भी ऐसा ही लिखा है और ऐसा ही रूह अल्लाह श्री श्यामाजी ने बताया है।

पर आम खलक ना समझैं, जाकी पैदास कही जुलमत।
इलम लदुन्नी से जानत, रूह मोमिन बीच वाहेदत।। १७ ।।

पर आम दुनियां के जीव निराकार से पैदा होने के कारण नहीं समझते। तारतम वाणी के ज्ञान से ही मोमिनों को अपने मूल-मिलावा की एकदिली की याद आती है।

Nijanand App

इलम नुकते की साहेदी, हक सूरत अर्स मारफतं।
सो सब बातें फुरमान में, खोले हकी सूरत हकीकत।। १८ ।।

तारतम ज्ञान से ही मोमिनों को श्री राजजी के स्वरूप और परमधाम का ज्ञान मिलता है। यह सब बातें कुरान में लिखी हैं, जिनके रहस्य हकी सूरत श्री प्राणनाथजी खोलेंगे।

बसरी मलकी और हकी, जो कही महंमद तीन सूरत।
दो देवे हक की साहेदी, फरदा रोज कयामत।। १९ ।।

बसरी, मलकी और हकी मुहम्मद की जो तीन सूरतें कही हैं, उनमें से रसूल साहब बसरी और श्यामा महारानी मलकी सूरत हैं। इन दोनों ने अपने ज्ञान से गवाही दी है और हकी सूरत श्री प्राणनाथजी ने आकर सब हकीकत और मारफत को जाहिर किया है।

नबी नबुवत कुरान माजजा, ए दोऊ साबित होवें इन से।
कुरान न खुले बिना खिताब, ना तो लिख्या सब इनमें।। २० ।।

रसूल साहब ने जो कुरान में कहा वह सत्य है। रसूल साहब की सच्चाई और साहेबी दोनों को, जिनके सिर पर इमाम मेंहदी का खिताब है, वह श्री प्राणनाथजी महाराज आकर सच्चा साबित करेंगे। कुरान में लिखा तो सब था, पर रसूल साहब को खोलने का अधिकार नहीं था।

इन साहेदिएं सब मिलसी, हिंदू या मुसलमीन।
मुआ दज्जाल सब का कुफर, यों सब पाक हुए एक दीन।। २१ ।।

कुरान की इस गवाही से हिन्दू या मुसलमान सबके दिलों का पाप मिट जाएगा और सभी पाक-साफ होकर एक निजानन्द सम्प्रदाय में आकर एक पारब्रह्म के पूजक बनेंगे।

और भी साहेदी फुरमान में, तबक चौदे जरा नाहें।
खेल नाम धरया सब केहेने को, ए जरा नहीं अर्स माहें।। २२ ।।

कुरान में और भी गवाही दी है कि चौदह तबक कुछ भी नहीं हैं। खेल के वास्ते ही इसे चौदह तबक कहा। परमधाम में तो इसका कुछ भी मूल नहीं है।

और ठौर न काहूं अर्स बिना, अर्स न कहूं इंतहाए।
जो आप कछुए है नहीं, तिन क्यों अर्स नजरों आए।। २३ ।।

परमधाम के बिना और कोई ठिकाना है ही नहीं। परमधाम बेशुमार है। संसार, जिसका कोई अस्तित्व ही नहीं है, की नजर में परमधाम कैसे आ सकता है?

ए अर्स देखें रूह मोमिन, जो उतरे नूर बिलन्द से।
नाहीं क्यों देखे है को, ए तो जाहेर लिख्या किताबों में।। २४ ।।

परमधाम से उतरकर जो रूहें खेल में आई हैं, वही खेल में परमधाम को देख सकती हैं। यह संसार जो कुछ नहीं है, वह अखण्ड को कैसे देख सकता है? यह बात सभी शास्त्रों में स्पष्ट लिखी है।

बंझापूत फूल आकास, और ससिक सिंग।
कह्या वेद कतेब में, भंग न कछू अभंग।। २५ ।।

इस संसार को वेदों ने बांझ के पूत (पुत्र) के समान, आकाश में फूल के समान और खरगोश (ससला) के सिर पर सींग के समान कहा है, जो होते ही नहीं। वह नष्ट क्यों होगा और अखण्ड क्या होगा?

Nijanand App

यों असल खेल की है नहीं, ए तो दिल में देखाई देत।
किया हुकमें महंमद रूहों देखने, तो भिस्त में इनों को लेत।। २६ ।।

इस तरह से खेल की कुछ असलियत नहीं है। यह तो मात्र दिल का भ्रम है, जो श्री राजजी महाराज के हुकम ने श्री श्यामा महारानी और रूहों को दिखाने के लिए बनाया है। इनके कारण से ही इस ब्रह्माण्ड को अखण्ड कर देंगे।

हक हुकमें सब बेवरा किया, वास्ते हादी रूहन।
जो सहूर कीजे मिल महामती, तो लज्जत लीजे अर्स तन।। २७ ।।

श्री राजजी महाराज के हुकम ने श्री श्यामा महारानी और रूहों के वास्ते ही यह विवरण किया है। श्री महामतिजी कहते हैं कि यदि मिलकर हम सब विचार करें तो परमधाम के सब आराम और साहेबी के सुख यहीं पर मिल सकते हैं।

॥ प्रकरण ॥ २६ ॥ चौपाई ॥ १९६६ ॥

मता हक–ताला ने मोमिनों को दिया

एता मता तुम को दिया, सो जानत है तुम दिल।
बेसक इलमें ना समझे, तो सहूर करो सब मिल।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि तुमको इतने बड़े परमधाम की जागृत बुद्धि का ज्ञान दिया है। यदि तुम्हें फिर भी इस वाणी की समझ न आए तो जागृत बुद्धि से सब मिल-बैठकर विचार करना।

ए तो देख्या बड़ा अचरज, पाए सुख बका अपार।
भी बेसक हुए हक इलमें, तो भी छूटे ना नींद विकार।। २ ।।

यह बड़ी हैरानी वाली बात देखी कि परमधाम के बेशुमार सुख पाकर और जागृत बुद्धि के ज्ञान से निःसंदेह होने पर भी माया की चाहना नहीं छूटती।

ए बोलावत है हुकम, खुदी भी हुकम की।
तो हमेसा पाक होए, हक इस्क प्याले पी।। ३ ।।

यहां श्री राजजी महाराज का हुकम कहलवा रहा है और हुकम के वास्ते (मोमिन के वास्ते) ही कहा गया है। इसलिए, हे मेरी आत्मा! दुनियां को पीठ देकर पाक-साफ होकर श्री राजजी के इश्क के प्याले पी।

खुदी हक हुकम की, सो तो भूलें नाहीं कब।
वह काम सोई करसी, जो भावे अपने रब।। ४ ।।

यह तो श्री राजजी महाराज के हुकम का ही अहं है जो कभी नहीं भूलेगा, इसलिए हुकम तो वही काम करेगा, जो श्री राजजी महाराज को पसन्द होगा।

हुकम तो है हक का, और खुदी भी ना हुकम बिन।
खुदी हुकम दोऊ हक के, इत क्या लगे रूहन।। ५ ।।

हुकम श्री राजजी का है और अहंभाव भी हुकम का है, इसलिए अहंभाव और हुकम दोनों श्री राजजी के हैं। यहां रूहों को क्या लेना-देना, सब कुछ कराने वाला हक का हुकम है।

Nijanand App